**सोचा ना था**

जो थे दोस्त दिल के बहुत करीब

आज उनके बगैर हो गए हम गरीब

प्यारे थे सारे दोस्त बस कोई समझ नहीं पाया

क्यूंकि हमने दोस्ती में प्यार नै जताया

आज तो सबको बस दिखावा है प्यारा

मुह में रखो घी और पीछे करो इशारा

भले चाहे ले लो दोस्तों की जान

अगर प्यार जताओगे तो दुनिया मेहरबान

अगर मनो दूसरों की बात तो तुम अच्छे

जरा सी भी आना कानी की तो नहीं तुम सच्चे

भले तुम्हारा कहना कितना भी हो सही

कोई नहीं रहेगा तुम्हारे साथ सिवाए आँखों में नमी

अगर जाओगे खुशियों की तलाश में

राह में मिलेंगे बहुत नीच लोग प्यार की आड़ में

मगर कहना यही है की मानना ना तुम हार

छाव होती है सुहानी मगर गर्मी कर देती है बेक़रार

दूसरो का सहारा तो हमने कभी नहीं पाया

खुद की ना सोची कभी बस दूसरों को हसाया

बात ये नहीं है, की हमारे प्यार में कुछ थी कमी

दोस्त हमें समझ नहीं पाये क्यूंकि आँखों में ना आई नमी

जब नहीं बचा कोई, तो काम में हो गए मशगूल

जो भी किया मन से, कभी भटके ना बेफिजूल

फूल तो अच्छे लगते ही है, मगर कांटे भी है कबूल

मंजिल के लिए कुछ भी करेंगे, भले दोस्त कहलाएँ हम फ़िज़ूल

सोचा ना था की हम इतना बदल जायेंगे

मंजिल की चाहत में बढ़ते चले जायेंगे

दूसरी थी बात जब हम थे फर्श पर

आज खुदाया की रहमत से आ पहुचे हम अर्श पर

अब तो बस अरमान रखते है फूलो के

कांटे भी आ जाये तो गिला नहीं करते अपने उसूलों से

मुह मोड़ कर पलटना हमने कभी सीखा नहीं

राही है हम कभी हमने ये भुला नहीं

ये तो अरमान है हमारे, जो हमें आगे बढ़ाते है

हमें अपने सपनो की ऒर एक नया सवेरा दिखाते है

रास्ते और भी हसीं लगने लगते है, खिलता नया सवेरा देखकर

राही है हम मुस्कुरा उठते है, कांटो का पतीला देखकर

अब तो कांटो में ही हमें मंजिल नज़र आती है

चलते चलते दिल में फूलो का एहसास दिलाती है

बहुत सुकून मिलता है कांटो के बीच चलकर

राही है हम चल पड़ते है मंजिल का टीला देखकर

किशोर पाठक